Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

मुजफ्फरपुर जिला में गंदी बस्तियों की समस्या एवं समाधान : एक भौगोलिक अध्ययन

बिट्टू कुमार [1], प्रो.(डॉ.) जफर इमाम[2]

[1]शोध छात्र,विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

[2]पूर्व विभागाध्यक्ष,विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

Email: kumarbittu9493@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171224
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 115-117
December 2025
Submitted: 17 Nov. 2025
Revised: 27 Nov. 2025
Accepted: 12 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सार संक्षेप

गंदी बस्तियाँ एक ऐसी समस्या है जो शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए आम समस्या है। यह समस्या न केवल शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए चुनौती है बल्कि यह पूरे समाज के लिए एक बड़ा मुद्दा है। शोध जिला मुजफ्फरपुर में तीव्र नगरीकरण के फलस्वरूप गन्दी बस्तियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। गन्दी बस्तियां ऐसी बस्तियां होती है जहाँ बुनियादी सुविधाओं जैसे की स्वच्छ जल, स्वच्छता, विद्युत, शिक्षा एवं स्वस्थ्य सेवाओं का अभाव होता है। ये बस्तियां आमतौर पर अवैध रूप से निर्मित होती है तथा शहरी जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। बिहार राज्य का मुजफ्फरपुर जिला जो उत्तर बिहार की राजधानी भी कहा जाता है इस समाया से अछूता नहीं है। यहाँ की जनसँख्या तेजी से बढ़ रही है जिससे नियोजित शहरी विकास के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही है। इस शोध पत्र में मुजफ्फरपुर जिला की गंदी बस्तियों की समस्या का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जायेगा।

शब्द कुँजी: *गंदी बस्तियाँ, शहरीकरण, बुनियादी आदि।*

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

शोध जिला बिहार राज्य के उत्तर-मध्य भाग में स्थित है इसे उत्तर बिहार की राजधानी भी कहा जाता है। इसकी भौगोलिक अवस्थिति लगभग 25° 54′ से 26° 23′ उत्तरी अक्षांश तथा 84° 53′ से 85° 45′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इस जिला के उत्तर में पूर्वी चंपारण, दक्षिण में वैशाली, पूर्व में समस्तीपुर तथा पश्चिम में सीतामढ़ी जिला अवस्थित है। यह जिला उत्तर बिहार का प्रमुख व्यापारिक एवं शैक्षणिक केंद्र है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस जिला की कुल जनसंख्या 4801062 है जबकि मुजफ्फरपुर नगर की कुल जनसंख्या 393724 है। वर्तमान में मुजफ्फरपुर की कुल जनसंख्या लगभग 54 लाख है। इसका क्षेत्रफल 3175.9 वर्ग किलोमीटर है। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की तीव्र प्रवासन एवं रोजगार की सीमित उपलब्धता के कारण नगर में गंदी बस्तियों की संख्या बढ़ रही है।

वितरण

गंदी बस्तियाँ औद्योगिकता का फलन है जो कई सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को जन्म देती है। ऐसे देखा गया है कि प्रवासी जनसंख्या मुख्यतः प्रतिकूल तत्व जैसे - गरीबी, बेकारी, कम मजदूरी, छोटी तथा अनार्थिक जोत, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी आदि तथा अनुकूल तत्व जैसे रोजगार की सुविधा, ऊँची मजदूरी दर, मजदूरी के निश्चित घंटे, शिक्षा स्वस्थ्य एवं मनोरंजन आदि के कारण शहरों की जनसंख्या पर केन्द्रित होती है। इसी तरह शहरों में जब उद्योग स्थापित हो जाते हैं, तो उद्योग के आस-पास जनसंख्या केन्द्रित हो जाती है तथा उसके आस-पास गन्दी बस्तियों का निर्माण शुरू हो जाता है। मुजफ्फरपुर शहर में अनेक गंदी बस्तियाँ फैली हुई ऐसे तो प्रत्येक वार्ड में गन्दी बस्तियाँ लगभग है फिर भी मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रो में गन्दी बस्तियाँ पायी जाति है –

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
बिट्टू कुमार , शोध छात्र,विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

How to cite this article:
कुमार, . बिट्टू ., & इमाम, . जफर . (2025). मुजफ्फरपुर जिला में गंदी बस्तियों की समस्या एवं समाधान : एक भौगोलिक अध्ययन. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 115–117.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18184753

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18184753
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

क्रम संख्या	गंदी बस्ती का क्षेत्र	अनुमानित जनसंख्या
1	बैरिया बस स्टैंड	12000
2	जूरल छपड़ा	8000
3	मिठनपुरा	5000
4	सिकंदरपुर	9000
5	बेला औद्योगिक क्षेत्र	6500

गंदी बस्तियों की उत्पत्ति और विकास के कारण

शोध क्षेत्र मुजफ्फरपुर नगर में निवास करने वाले निम्न आय वर्ग के लोगों की सबसे बड़ी आवश्यकता सस्ता आवास की होती है। मलिन बस्तियाँ इस वर्ग के लोगों के लिए कम मूल्य पर आवासीय सुविधा प्रदान करती हैं इस तरह नगर में निम्न आय वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ती जाती है और गन्दी बस्तियों का विकास होता चला जाता है। इस गन्दी बस्तियों में निवास करने वाले लोगों से बदतर जिन्दगी फुटपाथ पर रहने वाले लोगों की होती है जो खुले आकाश के नीचे सोते है, फुटपाथ का फर्श ही उनका बिछौना होता है। खुला आकाश इनके घर की छत होती है। आश्चर्यजनक बात यह होती है कि जैसे – जैसे नगर का विकास होता जाता है गन्दी बस्तियों का भी विस्तार होता जाता है।

ग्रामीण शहरी प्रवासन

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के सीमित अवसर होते है लोग रोजगार की खोज में नगरों की ओर पलायन करते हैं। नगर में आने के बाद मलीन बस्तियों में सस्ती आवास का उपयोग करते हैं क्योंकि इनके पास उतना रुपये नहीं रहता है कि ऊँची कीमत पर जमीन खरीदकर या मकान भाड़े पर लेकर रहें। अन्तोगत्वा वे मलीन का सहारा लेते हैं।

रोजगार की कमी

प्रतिदिन रोजगार के लालच में लोग गांव से शहर की ओर पलायन करते हैं ये अस्थायी मजदूरी करने वाले लोग होते हैं जिनके पास स्थायी आवास बनाने का खर्च नहीं होता है, वैसे लोग स्लम एरिया में ही मज़बूरी में रहना पसन्द करते हैं, धीरे–धीरे गन्दी एरिया विकास होता जाता है। क्योंकि परिवार के भरण – पोषण हेतु रोजगार करना परता है लेकिन रहन के लिए उनके पास स्थायी आवास नहीं होने के कारण वे लोग मलीन बस्तियों में रहना पसन्द करते हैं।

भूमि की अनुपलब्धता

शोध जिला के नगरी क्षेत्र में जमीन की कीमत अधिक होने के कारण गरीब वर्ग के लोग अपनी मौलिक आवश्यकताओं में एक आवास का निर्माण नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनके पास उतने रुपये नहीं है कि वे जमीन खरीदकर मकान बना सके। साथ ही रोजगार के लिए शहर रहना ही पड़ता है नहीं रहने पर परिवार का भरण – पोषण नहीं हो पायेगा। ऐसी स्थिति में ये लोग अवैध रूप से भूमि पर कब्जा कर झुग्गी बस्तियां बसा लेते हैं जिससे मलीन बस्ती का उदय हो जाता है।

शहरी नियोजन की कमी

नगर–निगम और अन्य निकायों द्वारा प्रभावी नगरीय नियोजन नहीं होने के कारण अवैध निर्माण का बढ़ावा मिलता है। कभी–कभी छुट भैये नेता वोट को बढ़ावा देने के ख्याल से राजनितिक संरक्षण मिलता है जिससे गंदी बस्तियों का विकास होता चला जाता है।

गंदी बस्तियों पर सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव

गंदी बस्तियों के विकास होने से सर्वप्रथम स्वास्थ्य पर संकट मंडराने लगता है क्योंकि दूषित जल और अस्वच्छ वातावरण के कारण डायरिया, डेंगू, त्वचा रोग जैसे संक्रमण रोग फैलते हैं। कोविड–19 जैसी महामारी के दौरान संक्रमण का उच्च जोखिम बना रहता है। दूसरी ओर इन गंदी बस्तियों के शिक्षा पर अगर हम दृष्टिपात डालते है तो पाते हैं कि प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था न के बराबर होती है। बाल श्रम की समस्या भी देखने को मिलती है।

गंदी बस्तियाँ अपराधियों की शरण स्थली होती है। यहाँ का सामाजिक वातावरण जुआ, शराब, चोरी, वैश्यावृत्ति जैसे अपराधों के लिए अनुकूल अवसर प्रदान करता है। साथ ही इस नगर में बाल अपराधियों का भी बढ़ावा मिलता है। बेरोजगारी और निराशा अपराध का जन्म देती है। महिलाओं और बच्चों की स्थिति संवेदनशील होती है।

पर्यावरण पर दुष्प्रभाव की दृष्टि से देखा जाए तो इस क्षेत्र में गंदगी और प्लास्टिक के अनियंत्रित उपयोग से जल एवं मृदा प्रदूषण का बढ़ावा मिलता है। इस क्षेत्र में देखा जाता है कि नदियों में सीवेज का बहाव और नालियों का जाम होना आम बात है। जिससे पर्यावरण पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

समाधान एवं संभावनाएँ

सर्वप्रथम निम्न योजनाएँ को सही ढंग से कार्यान्वित कर गंदी बस्तियों की समस्या से हद तक छुटकारा पाया जा सकता है –

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

1. प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) – यह योजना प्रधानमंत्री भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसका उद्देश्य देश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सभी को सस्ती आवास की सुविधा प्रदान करना है। इस योजना का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में आवास विहीन लोगों को आवास की सुविधा प्रदान करना है। यह सुविधा वैसे लोगों को दी जाती है की जो आर्थिक रूप से कमजोर है। उन्हें आवास की सुविधा सुविधा देकर सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए इन–सिटू स्लम री–डेवलपमेंट स्लम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्वस्थ आवास प्रदान करने के लिए काम कर रही है। इसके साथ ही सरकार क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी स्कीम, अफोर्डेबल हाउसिंग इन पार्टनरशिप तथा बेनिफिसियरी लेड कंस्ट्रक्शन/एनहांसमेंट के तहत आवास सुविधा प्रदान कर रही है।

2. सामुदायिक विकास कार्यक्रम – इसके अन्तर्गत किसी समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक स्थिति सुधारने के लिए सरकारी स्तर एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से चलाया जाता है। इसका उद्देश्य समुदाय की जीवन गुणवत्ता को सुधारना, स्वावलंबन और सहभागिता को बढ़ावा देना, बुनियादी सेवा (जल, स्वच्छता, शिक्षा एवं स्वास्थ्य) की उपलब्धता को सुनिश्चित करना।

इसके अन्तर्गत निम्न कार्यक्रम चलाए जाते हैं –

(1) स्वास्थ्य सेवाएँ – गंदी बस्तियों में घूम–घूम कर मुफ्त इलाज की व्यवस्था करना। इसके साथ ही टीकाकरण अभियान तथा स्वस्थ्य शिविर भी लगाये जाते ताकि गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों में स्वास्थ्य सुधार हो सके।

(2) शिक्षा एवं साक्षरता – इन गंदी बस्तियों में अंतरिम शिक्षण केन्द्र या बस्ती विद्यालय का संचालन किया जाता है जिससे बाल श्रमिकों के लिए विशेष कक्षाएँ चलाए जाते है तथा महिला को साक्षर कर सिलाई, कटाई आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(3) स्थानीय रोजगार सृजन – गंदी बस्तियों में स्थानीय रोजगार सृजन की व्यवस्था की जाती है जिसमें नगर निगम स्तर पर श्रम आधारित योजनाएं मनरेगा का शहरी संस्करण आदि। जब इन बस्तियों में रहने वालों को रोजगार मिल जायेगा तो बहुत समस्या का अपने–आप समाधान हो जायेगा क्योंकि खाली मन शैतान का होता है। रोजगार के अभाव में चोरी, डकैती, बाल अपराध आदि का सहारा लेते हैं।

इन गंदी बस्तियों में स्टार्ट अप एवं लघु उद्योग को बढ़ावा देने से समस्या का समाधान हो सकता है। जब सब लोग कार्य में व्यस्त रहेंगे तो गंदी बस्तियों के लोग जिसकी आर्थिक स्थिति दयनीय है उनके आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है।

(4) जनसंख्या नियंत्रण और जन जागरूकता अभियान – इस गंदी बस्तियों पर जनसंख्या वृद्धि भी एक अलग समस्या बनती जा रही है। इसके लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम को सही ढंग से प्रचार–प्रसार कर चलाया जाए तो जनसँख्या में कमी आ सकती है। इस क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया जाए जिसमें एन.जी.ओ. की भागीदारी से बहुत हद तक इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

शोध जिला मुजफ्फरपुर नगर की गंदी बस्तियाँ न केवल भौगोलिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि सामाजिक एवं प्रशासनिक नीति–निर्धारण में भी इनकी अहम भूमिका है। इस समस्या का समाधान केवल सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है अपितु स्थानीय समुदाय, सामाजिक संस्थाओं एवं नीति निर्माताओं की सामूहिक सहभागिता से एक स्वच्छ, सुरक्षित, और टिकाऊ शहरी वातावरण का निर्माण संभव है। गंभीर प्रयासों, मजबूत निति निर्माण और प्रभावी कार्यानवयन से मुजफ्फरपुर को गंदी बस्तियों की समस्या से मुक्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. गर्ग एवं एच.एस. (2001), नगरीय भूगोल, साहित्य भवन, आगरा।
2. Bansal S. C. (2013), Nagriya Bhugol, Minaxi Prakashan, Meerut.
3. Singh R. L. (1955), Banaras: A Study of Urban Geography, Nand Kishore Brothers, Varanasi.
4. भारत की जनगणना 2011
5. बिहार शहरी विकास मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट।
6. नगर निगम मुजफ्फरपुर की दस्तावेजी रिपोर्ट।
7. Slums in India: A Statistical Compendium, Ministry of Housing and Urban Affairs.